17 नवम्बर 2015, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI प्रतिदिन
सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रातः 6.50 से 7.20 बजे तक

वर्ष : 38, अंक : 16 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये
नवम्बर (द्वितीय), 2015 (वीर नि. संवत्-2542) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

वेदी शिलान्यास, शिक्षण शिविर एवं प्रथम राष्ट्रीय धार्मिक विद्यालयों का अधिवेशन संपन्न

इन्दौर (म.प्र.) : यहाँ रामाशाह मंदिर मल्हारगंज एवं ढाईद्वीप जिनायतन में श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन शासन प्रभावना ट्रस्ट एवं श्री पंच लश्करी गोठ ट्रस्ट के संयुक्त तत्त्वावधान में वेदी शिलान्यास, षष्टम् आध्यात्मिक शिक्षण शिविर एवं धार्मिक विद्यालयों का प्रथम राष्ट्रीय अधिवेशन दिनांक 31 अक्टूबर एवं 1 नवम्बर 2015 को संपन्न हुआ।

दिनांक 31 अक्टूबर – प्रात: जिनेन्द्र पूजन एवं गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन के उपरान्त डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के णमोकार महामंत्र विषय पर मार्मिक प्रवचन का लाभ मिला।

विद्यालयों का प्रथम राष्ट्रीय अधिवेशन – मुमुक्षु समाज में संचालित विभिन्न महाविद्यालयों एवं विद्यालयों का प्रथम राष्ट्रीय अधिवेशन संपन्न हुआ। इस प्रसंग पर श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय **जयपुर,** आचार्य अकलंकदेव न्याय संस्थान ध्रुवधाम **बांसवाड़ा,** आचार्य धरसेन दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय **कोटा,** जैन बालिका संस्कार संस्थान शाश्वतधाम **उदयपुर,** आचार्य कुन्दकुन्द विद्या निकेतन **सोनागिर,** श्री नंदीश्वर विद्यापीठ **खनियांधाना,** आचार्य समन्तभद्र शिक्षण संस्थान सिद्धायतन **द्रोणगिरि,** चैतन्य विद्या निकेतन चैतन्यधाम **अहमदाबाद** एवं सन्मति संस्कार संस्थान **कोटा** के कुल 38 अध्यापक एवं 398 छात्र-छात्रायें उपस्थित थे।

'श्रावकाचार एवं क्रमबद्धपर्याय' विषय पर संगोष्ठी – सभी विद्यालयों के मध्य जिनागम के इन दोनों विषयों पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन हुआ। अध्यक्ष के रूप में डॉ. अनुपमजी जैन इन्दौर एवं निर्णायक के रूप में पण्डित शांतिकुमारजी पाटील व डॉ. संजीवकुमारजी गोधा उपस्थित थे। प्रतियोगिता का मंगलाचरण डॉ. ममता जैन ने एवं संचालन पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा ने किया।

काव्यपाठ प्रतिस्पर्धा – दोपहर को द्वितीय सत्र काव्यपाठ प्रतिस्पर्धा के रूप में संपन्न हुआ। इस प्रसंग पर सभी विद्यालयों से आये हुये प्रतिनिधि बालकों ने क्रमबद्धपर्याय एवं श्रावकाचार पर **स्वनिर्मित कविता** प्रस्तुत की। अध्यक्ष के रूप में श्री महेन्द्रजी चौधरी भोपाल एवं निर्णायक के रूप में पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित रतनचंदजी शास्त्री कोटा, पण्डित सचिनजी शास्त्री अहमदाबाद उपस्थित थे। मंगलाचरण कु.प्रतीति पाटील जयपुर ने एवं संचालन पण्डित प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा ने किया।

सायंकाल रामाशाह मंदिर में सभी विद्यालयों द्वारा भक्ति गीतों की सुन्दर प्रस्तुति दी गई तथा सभी धार्मिक विद्यालयों का परिचय उनके प्रतिनिधियों द्वारा दिया गया। सभा का संचालन श्री मुकेशजी जैन इन्दौर ने किया। तदुपरान्त डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के सल्लेखना विषय पर मार्मिक प्रवचन का लाभ मिला।

पुरस्कार वितरण – महाविद्यालय स्तर पर आयोजित प्रतिस्पर्धा में सर्वश्रेष्ठ प्रस्तुति के लिये प्रथम पुरस्कार (11 हजार रुपये) श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय जयपुर को, द्वितीय पुरस्कार (7500 रुपये) आ.धरसेन महाविद्यालय कोटा को एवं तृतीय पुरस्कार (5 हजार रुपये) जैन बालिका संस्कार संस्थान उदयपुर को प्रदान किया गया।

विद्यालय स्तर पर प्रथम पुरस्कार (11 हजार रुपये) जैन बालिका संस्कार संस्थान उदयपुर ने, द्वितीय पुरस्कार (7500 रुपये) चैतन्य विद्या निकेतन अहमदाबाद ने एवं तृतीय पुरस्कार (5 हजार रुपये) सन्मति संस्कार संस्थान कोटा ने प्राप्त किया। ज्ञातव्य है कि सभी विद्यालयों से पधारे 398 छात्र-छात्राओं को स्टेशनरी सहित आकर्षक बैग दिया गया।

दिनांक 1 नवम्बर – प्रात: जिनेन्द्र पूजन व डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचनोपरान्त शिलान्यास महोत्सव सभा का शुभारम्भ हुआ।

पाँच मेरु पर्वतों के शिलान्यासकर्त्ता – श्रीमती शोभाबेन रसिकलालजी धारीवाल पूना, श्री अजितप्रसादजी जैन दिल्ली, श्री छगनलालजी कालीदासजी वाघर परिवार हस्ते त्रंबक भाई व खेमचंदभाई वाघर जामनगर, श्री नवीनजी जैन गाजियाबाद, श्री अनिलकुमारजी संघवी इन्दौर।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित रमेशचंदजी बांझल इन्दौर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, पण्डित सचिनजी शास्त्री चैतन्यधाम, पण्डित दिनेशजी कासलीवाल उज्जैन, पण्डित विकासजी शास्त्री इन्दौर, पण्डित अशोकजी शास्त्री बकस्वाहा द्वारा शुद्ध तेरापंथ

(शेष पृष्ठ 8 पर ...)

सम्पादकीय –

संजू के पिता का अन्तर्द्वन्द्व

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

सेठ सिद्धोमल की बच्चों को शिक्षा दिलाने के संबंध में यह धारणा बन गई थी कि –''भला बिना पिटाई के भी कहीं विद्या आती है ?'' वे कहा करते थे –'डंडा चाले धम-धम, विद्या आवे छम-छम', अत: उन्होंने स्कूल के सभी अध्यापकों से कह रखा था – संजू की हड्डी-हड्डी हमारी और चमड़ी-चमड़ी तुम्हारी। पीटते समय इतना ध्यान अवश्य रखना कि कहीं हड्डी न टूट जाय। यदि आप लोगों की बात न माने तो उधेड़ दो चमड़ी अच्छी तरह.....। हम कुछ कहने वाले नहीं हैं।''

सेठ सिद्धोमल के इस अविचारितरम्य कथन का अध्यापकों ने भरपूर दुरुपयोग किया, खूब अनुचित लाभ उठाया। अब घर-बाहर का कोई भी काम हो, सबसे पहले संजू पर ही नजर जाती थी, क्योंकि संजू से कोई भी काम कराने में उन्हें कोई खतरा नहीं रहा था। पिता का परमिट जो मिल गया था।

परिणाम यह हुआ कि संजू स्कूल जाने से ही जी चुराने लगा। आखिर वह कब तक चमड़ी उधड़वाता और वह भी पढाई के कारण नहीं; बल्कि मास्टरजी के घरेलू कामों के कारण। या तो मास्टरजी के घर का काम करो, नहीं तो बन जाओ बेटा मुर्गा ! चाहे काम उसके वश का हो या न हो, करना तो पड़ेगा ही, वर्ना ----।

बच्चों को यदि कोई मारे-पीटे, परेशान करे तो उसके लिये पिता ही सबसे बड़ी अदालत होती है, जहाँ वह अपनी फरियाद करता है; पर संजू के लिये उस अदालत के दरवाजे तो पहले से ही बंद हो चुके हैं, उसके पिता तो उसकी बात सुनते ही नहीं थे। आखिर सुने भी क्यों ? उसके प्रति उनकी यह धारणा जो बन गई थी कि ''बच्चों को मुँह लगाना ठीक नहीं। शिकवा-शिकायतों के सिवाय बच्चे कहेंगे भी क्या ? बस खेलने, खाने और पानी की तरह पैसा बहाने के अलावा बच्चों को काम ही क्या है ?---''

इन कारणों से उसके लिये तो अब केवल माँ ही उसकी सुप्रीम कोर्ट थी। सो जब पानी सिर से ऊपर से जाता दिखता था तो माँ के सामने केवल उदास हो मुँह लटकाकर बैठ जाता, बस इसी में माँ सब-कुछ समझ जाती और आम महिलाओं की भाँति बड़-बड़ाकर अपने गुबार निकाल लिया करती। पति के सामने इससे अधिक तो वह भी क्या कर सकती थी ?

एक दिन संजू की माँ सुधा ने अपने बीस वर्षीय बेटे संजू को उदास बैठा देखकर छोटे बच्चे की तरह अपनी गोद में उसका सिर रखकर माथे पर हाथ फेरते हुये कहा –''बेटा ! क्या बात है ? आज तू ऐसा उदास क्यों हो रहा है ? क्या पिताजी ने कुछ कहा है, डांटा-डपटा है ?''

माँ के मुँह की ओर दयनीय दृष्टि से देखते हुये संजू कुछ कहना ही चाहता था कि उसे कहने का अवसर दिये बिना ही सुधा ने कहना चालू रखा –''उनकी तो आदत ही ऐसी हो गई है, जब देखो तब डाँटते ही रहते हैं। कभी प्यार से बोलना तो जानते ही नहीं हैं। चाहे किसी की गलती हो या न हो, बस उनके सामने तो मुँह सिये बैठे रहो तो ठीक; किसी ने कुछ कहा नहीं कि बरस पड़े। एक बोतल का नशा तो मानो बिना पिये ही चढा रहता है। आखिर ! मेरे बेटे ने ऐसा कौन-सा अनर्थ कर डाला है ? बेचारा मुँह बोलना तक तो जानता नहीं है।''

संजू ने फिर डरते-डरते अपनी बात कहनी चाही, तो माँ ने कहा –''चल ! उठ !! हाथ-मुँह धो ले और नाश्ता कर ! आने दे अभी तेरे पापा को ... आज मैं उन्हें समझाकर ही रहूँगी। अरे ! अब बच्चा बच्चा नहीं रहा, बराबरी का हो चला है, पर कुछ सोचते ही नहीं हैं और यदि खुदा न खास्ता कभी मेरे मुँह से संजू के लिये कुछ निकल गया तो मुझे उपदेश झाड़ने बैठ जाते हैं .....। बड़े प्यार के लहजे में कहेंगे – सुधाजी ! आखिर बच्चा है, बच्चे गलतियाँ नहीं करेंगे तो क्या हम बूढे लोग करेंगे ? बच्चों पर ज्यादा गरम न हुआ करो।'' ऊँह ....! आने दो आज.....।

सेठ सिद्धोमल के घर में प्रवेश करते ही सुधा ने उन्हें आड़े हाथों लेते हुये पुन: कहना प्रारम्भ कर दिया –''ओह ! संजू के पापा ! जब मैं संजू को थोड़ा-बहुत डाँटती-फटकारती हूँ तो आप ही मुझे समझाते हो और बड़ी-बड़ी पोथियों के पन्ने पढ-पढ कर सुनाते हो। मुझे याद है एक बार आपने एक श्लोक सुनाया था –

''लालयेत् पंचवर्षाणि, दस वर्षाणि ताडयेत्।
प्राप्ते तु षोडसे वर्षे पुत्रं मित्रं समाचरेत्।।

याद है न ?''

''हाँ, हाँ सुधा ! देखो न ! कितना अच्छा कहा इस संस्कृत के कवि ने !''– सिद्धोमल ने उत्साहित होते हुये कहा।

''क्या खाक अच्छा कहा – यदि अच्छा कहा होता तो तुम यह क्यों भूल गये कि अब आपका बेटा भी बीस बरस का हो गया है। मैं पूछती हूँ –और कबतक डाँटते-डपटते रहोगे इस तरह ?'' सुधा ने अधिकार भाव से अपनी बात चालू रखते हुये आगे कहा – ''देखते नहीं अब आपके बेटे की दाढी-मूँछें निकल आई हैं। क्या अब भी दस-बारह वर्ष के बच्चों की तरह डाँटते-फटकारते रहोगे ?

(क्रमश:)

श्री टोडरमल जैन मुक्त विद्यापीठ के छात्र ध्यान दें

पत्राचार पाठ्यक्रम की दिसम्बर 2015 के अंतिम सप्ताह में होने वाली द्वितीय सेमेस्टर की परीक्षाओं के पाठ्यक्रम का विवरण निम्नानुसार है; परीक्षार्थी इसी के अनुसार तैयारी करें –

द्विवर्षीय विशारद परीक्षा की सैकेण्ड सेमेस्टर परीक्षा

प्रथम वर्ष – 1. वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग 2
2. वीतराग विज्ञान पाठमाला भाग 3

द्वितीय वर्ष – 1. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग 2
2. धर्म के दशलक्षण + भक्तामर स्तोत्र

त्रिवर्षीय सिद्धांत विशारद परीक्षा की सैकेण्ड सेमेस्टर परीक्षा

प्रथम वर्ष – 1. रत्नकरण्ड श्रावकाचार
2. रामकहानी + आप कुछ भी कहो

द्वितीय वर्ष – 1. मोक्षमार्गप्रकाशक पूर्वार्द्ध (1 से 5 अध्याय)
2. नयचक्र–पूर्वार्द्ध (निश्चय व्यवहार)
3. हरिवंशकथा + भ.महावीर और उनका सर्वोदय तीर्थ

तृतीय वर्ष – 1. मोक्षमार्गप्रकाशक उत्तरार्द्ध (6 से 10 अध्याय)
2. नयचक्र–उत्तरार्द्ध (द्रव्यार्थिक पर्यायार्थिक नय प्रकरण)
3. शलाका पुरुष (सम्पूर्ण)

नोट : सभी परीक्षार्थियों को उनके प्रश्नपत्र केन्द्र/उनके पते पर दिसम्बर के तृतीय सप्ताह तक डाक द्वारा भेज दिये जायेंगे। यदि 25 दिसम्बर तक भी पेपर न मिले तो जयपुर कार्यालय से संपर्क करें।

जिनवाणी चैनल पर डॉ. भारिल्ल के प्रवचनों का समय परिवर्तित

जिनवाणी चैनल पर प्रसारित होने वाले डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचनों के प्रसारण का समय 7.00 बजे के स्थान पर अब 6.50 से 7.20 तक हो गया है।

अत: समय का विशेष ध्यान रखते हुये प्रात: 6.50 से प्रवचनों का लाभ लें।

ज्ञातव्य है कि जिनवाणी चैनल केबल के अतिरिक्त टाटा स्काई के चैनल नं.193, एयरटेल के 684 एवं वीडियोकॉन के 489 पर भी उपलब्ध है।

फैडरेशन का मासिक प्रगति विवरण

नागपुर (महा.) : यहाँ विगत 24 वर्षों से निरन्तर अखिल भारतीय महिला युवा फैडरेशन सक्रियरूप से कार्य कर रही है। फैडरेशन में सदस्यों की संख्या सक्रिय 30, समय–समय पर या विशेष कार्यक्रमों में 40 – इसप्रकार 70 है। पिछले दो वर्ष से तत्त्वार्थसूत्र वर्ष एवं वर्तमान में छहढाला वर्ष चल रहा है। मंदिरजी की साज–सज्जा, त्यौहारों पर गोष्ठी, कण्ठपाठ के माध्यम से तत्त्वप्रचार एवं आत्मानुभूति के उद्देश्य को सफल करने का प्रयास करते हैं। अनेक अवसरों पर सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किये जाते हैं। वर्तमान में 5 अक्टूबर को क्षमावाणी पर्व एवं बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' की श्रद्धांजलि सभा का आयोजन रखा था। मंदिरजी में डॉ. राकेशजी शास्त्री द्वारा बाबूजी के लेखों का वांचन एवं बाबूजी के साहित्य एवं जीवन–दर्शन विगत 1 से 8 अक्टूबर तक चला। पर्वराज दशलक्षण पर्व पर पाठशाला के बच्चों द्वारा 'सल्लेखना महोत्सव' पर नाटका का मंचन किया गया। पर्व के अवसर पर विदुषी वासन्तीबेन देवलाली, सीमा दीदी, श्रद्धा दीदी एवं प्रतीति दीदी को आमंत्रित किया गया था, जिन्होंने अपने ओजस्वी वक्तव्य से जिनागम के मोतियों को जनसमुदाय के कण्ठ का हार बना दिया।

– डॉ. स्वर्णलता जैन, मंत्री–अ.भा.म.युवा फै., नागपुर

इन्द्रध्वज मण्डल विधान संपन्न

बण्डा–सागर (म.प्र.) : यहाँ श्री 1008 महावीर पंचबालयति दिगम्बर जैन मंदिर में दिनांक 3 से 8 अक्टूबर तक इन्द्रध्वज मण्डल विधान संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पण्डित सिद्धार्थजी दोशी रतलाम के प्रवचनों का लाभ मिला।

दिनांक 4 अक्टूबर को 'ज्ञानमंदिर' पाठशाला भवन का शिलान्यास कार्यक्रम संपन्न हुआ। शिलान्यासकर्त्ता श्री विमलकुमारजी जैन दिल्ली, पण्डित कपूरचंद मुकेशकुमार मनोज शास्त्री करेली एवं श्री श्रेयांस–कल्पना जैन कर्रापुर थे।

प्रतिदिन सायंकाल पण्डित अंकितजी शास्त्री जयपुर व श्रीमती शशि जैन के निर्देशन में पाठशाला के बच्चों द्वारा नृत्य, नाटक, नेमि–राजुल संवाद, इन्द्रसभा, राजसभा आदि सांस्कृतिक कार्यक्रम हुये।

विधि–विधान के समस्त कार्य ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली के निर्देशन में पण्डित सुबोधजी शास्त्री शाहगढ व पण्डित अशोकजी उज्जैन द्वारा संपन्न हुये।

हार्दिक बधाई !

जयपुर (राज.) निवासी श्री नथमलजी झांझरी के सुपौत्र एवं श्री शैलेन्द्र कुमार जैन के सुपुत्र **चि. सौम्य जैन** का शुभ विवाह दिनांक 18 अक्टूबर को **सौ. अंकिता जैन** सीकर के साथ संपन्न हुआ। इस उपलक्ष्य में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग–विज्ञान हेतु 500–500/– रुपये प्राप्त हुये। एतदर्थ हार्दिक बधाई !

जैनतिथि दर्पण

2016

जैनतिथि दर्पण

2016

धर्म क्या, क्यों, कैसे और किसके लिए – *(बीसवीं कड़ी, गतांक से आगे)*

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल

पिछले अंक में हमने पढा कि – ***''तीन कारणों से यह व्यक्ति आत्मा की अनादि–अनन्तता को स्वीकार करने से हिचकता है। अपने दुष्कर्मों का फल भोगने से बचने के लिये, प्रमाद के कारण आत्मकल्याण के पुरुषार्थ से बचने के लिये और अपने उज्ज्वल भविष्य का विश्वास न होने के कारण।''***

यदि हमें आत्मा के आनंदमय, सुखी भविष्य का विश्वास हो जाये तो आत्मा की अनन्तता स्वीकार करने के प्रति हमारी अरुचि, उपेक्षा और प्रतिरोध स्वत: समाप्त हो जायेगा।

तब तो यह हमें अभीष्ट होगा, समझ में भी आने लगेगा और स्वीकृत भी होने लगेगा।

ऐसा ही हो इसके लिये ***आवश्यक है कि हम मात्र आत्मा की अनादि–अनन्तता की ही चर्चा न करें, उसके साथ–साथ आत्मा के अनंत गुणों, यथा अनन्तसुख, अनन्तवीर्य, अनन्तज्ञान आदि की भी स्थापना करें।*** *हम इस तथ्य की स्थापना करें कि* ***अनादि–अनंत यह आत्मा अनन्त गुणों का स्वामी, अनन्त वीर्यवान, सुख का सागर और शक्तियों का संग्रहालय है। तब ''अनन्तकाल तक के लिये अनन्तसुखी यह ''मैं'' भगवान आत्मा'' भला किसे स्वीकृत नहीं होगा ?***

अब आगे पढिये –

इससे पूर्व कि हम आत्मा के अस्तित्व की, उसकी अनादि–अनंतता की तथा सर्वगुणसम्पन्नता की स्थापना करें, हम इस तथ्य पर भी तो विचार कर लें कि यदि हम ऐसा (उपरोक्त प्रकार) नहीं मानते हैं तो हम पर क्या प्रभाव पड़ेगा ?

मैं एक उदाहरण से अपना अभिप्राय स्पष्ट करना चाहता हूँ।

मान लीजिये कि हमें एक इंटरव्यू देने के लिये जाना है, हम सज–संवरकर तैयार हैं और अब जाने की जल्दी में भी हैं। हम नहीं चाहते हैं कि अब कोई भी बाधा हमें समय पर पहुँचने से रोके क्योंकि यह मामूली सी देरी हमारे दीर्घकालीन भविष्य के लिये घातक सिद्ध हो सकती है।

हमारे सामने दो संभावनायें हैं कि बरसात हो भी सकती है और नहीं भी हो सकती है; दोनों ही संभावनायें 50–50 प्रतिशत हैं, अब हम क्या करें ?

छाता लेकर जायें या न ले जायें ?

ऐसे में आप क्या करेंगे ?

कोई भी समझदार व्यक्ति छाता लेकर जाना ही पसंद करेगा; क्योंकि ***छाता लेकर गये और बरसात न भी हुई तो हमारा क्या बिगड़ेगा ? पर यदि छाता न ले गये और बरसात हो गई तो हमारा क्या होगा ? तब तो हम कहीं के न रहेंगे न !***

इसलिये ***उचित यही है कि हम पूरी तैयारी के साथ जाएँ ताकि किसी भी स्थिति का सामना करने में सक्षम हों। हम छले न जाएँ, परेशान न हों, विफल न हों।***

एक और उदाहरण लें –

एक बार मैं ट्रेन में सफर कर रहा था। मेरे सामने एक सरदारजी बैठे थे, मस्तमौला। वे अपना जीवन भलीभांति जीना चाहते थे, जीवन का हर पल जीना चाहते थे, अपनी तरह से, आनन्दपूर्वक; कहीं कोई कसर न रह जाये।

वे नि:संकोच होकर सबसे इसप्रकार घुलमिलकर बातें करते, बतियाते, हंसी–मजाक करते हुये जा रहे थे मानो जनम–जनम के साथी हों।

जिस भी स्टेशन पर गाड़ी रुकती, वे नीचे उतरते, वहाँ जो कुछ भी मिलता वह खरीद लाते, खुद भी खाते व सबको खिलाते व मस्त हो जाते।

मैं उनके सामने की सीट पर बैठा हुआ अपने अध्ययन में व्यस्त था और उनकी मस्ती में शामिल नहीं हो रहा था। खाने–पीने की वस्तुयें वे मुझे भी प्रस्तुत करते तो मैं दोनों हाथ जोड़कर विनम्रतापूर्वक इन्कार कर देता और फिर अपने अध्ययन में व्यस्त हो जाता।

वे अपने में मस्त थे और मैं अपने में व्यस्त। ***हम दोनों में एक बात कॉमन थी, उनसे मेरा दुखदर्द नहीं देखा जा रहा था और मुझसे उनका। दोनों एक दूसरे के बारे में चिन्तित थे, एक दूसरे के दु:ख से दु:खी थे।*** *संध्याकाल हुआ, सूर्यास्त से पहिले मैंने अपने बैग से अपना टिफिन निकाला व भोजन किया, अपने साथ लाया हुआ अपना पानी का बर्तन निकालकर पानी पिया और फिर अपने बैग में से अपनी पुस्तक निकाली और जैसे ही पढने के लिये उद्धत हुआ तो उनसे नहीं रहा गया। वे मुझ पर व्यंग्य सा करते हुये बोले –*

''महात्माजी बड़े कंजूस मालूम होते हो। अपने घर से खाना ले आये, घर से ही पानी ले आये और तो और किसी से अखबार तक तो नहीं खरीदा, किताब भी घर से ही ले आये ?

लगते तो खाते–पीते घर के हो, क्या करोगे इतनी बचत करके ?

कहाँ ले जाओगे सारा धन ?

कुछ खर्चा करो, मौजमस्ती करो।

जीवन में और रक्खा की क्या है ? बस किसी तरह हँसते–खेलते कट जाये, और क्या चाहिये...?''

वे धाराप्रवाह बोलते ही जा रहे थे कि मैंने उन्हें बीच में ही टोकते हुये कहा कि –

''नहीं बात यह नहीं है। दरअसल मैं जैन हूँ और मेरे योग्य भोजन बाहर नहीं मिलता है इसलिये घर से ही भोजन और छना हुआ पानी साथ ले आता हूँ और सूर्यास्त से पहिले ही भोजन कर लेता हूँ व समय का सदुपयोग हो सके इसीलिये अपने आत्मकल्याणकारी ग्रन्थ साथ में लाता हूँ ताकि स्वाध्याय कर सकूं....।''

वे बाले पड़े कि –

''पंडितजी ये तो ठीक है, पर तुम तो सारी जिन्दगी ये दु:ख–दर्द झेलते हुये, भूखे रहकर उपवास करते हुये, धर्म करते–करते मर जाओगे और फिर अगर पुनर्जन्म होता ही नहीं होगा तब क्या होगा ?

क्या यह सब व्यर्थ नहीं चला जायेगा ?

तब आपका क्या होगा ?

मैंने उनसे कहा कि सरदारजी ! मैं कहाँ दुखी हूँ ?

मैं आपको किस एंगल से दुखी दिखाई दे रहा हूँ ?

मैं तो अत्यन्त शान्तिपूर्वक अपने स्थान पर बैठा हुआ अपने स्वाध्याय में मगन, अत्यन्त आनन्द में हूँ। ***दुखी तो मुझे आप दिखाई दे रहे हैं जो कि गर्मागर्म कढाई में तले जाते हुये पकौड़े की भाँति लगातार यहाँ से वहाँ फुदक रहे हैं, सुख की खोज में ये वो खा रहे हैं, न भक्ष्य–अभक्ष्य की चिंता है न स्वास्थ्य की चिंता, न पेट का ख्याल। बस लेटरबॉक्स की तरह उसमें कुछ भी ठूँसे जा रहे हैं।***

यदि आप दुखी न होते तो इन सब वस्तुओं में सुख की तलाश क्यों करते ?

और ***रही बात यह कि यदि पुनर्जन्म नहीं होता होगा तो मेरा क्या होगा ? सो मैं भी तो आपसे पूछ सकता हूँ कि अगर पुनर्जन्म होता होगा तो आपका क्या होगा ?***

मैं तो अभी भी सुखी ही हूँ और भविष्य के सुखों की तैयारी में व्यस्त हूँ पर आप तो अभी भी दुखी हैं और आपके पास भविष्य का भी कोई इंतजाम नहीं है। आपका क्या होगा ?

मेरे कहने का तात्पर्य यही है कि ***हम मानते हैं कि आत्मा अनादि–अनन्त है और आप इस बारे में कोई स्पष्ट राय नहीं रखते हैं, आप कहते हैं कि ऐसा हो भी सकता है और नहीं भी हो सकता है। ऐसे में यदि आत्मा की अनादि–अनन्तता की संभावना 50–50 प्रतिशत ही मान लें तब भी समझदारी तो इसी में है न कि हम इसप्रकार का जीवन जीयें, अपने जीवन में इसप्रकार के कार्य करें कि तैयारीपूर्वक अगले जीवन में जा सकें, क्या यही समझदारीभरा कार्य नहीं है ?*** *यदि हम बिना छाता लिये ही चल दिये और बरसात हो गई तो हमारा क्या होगा ?*

यदि आप हमसे कहते हैं कि साबित करिये कि ''आत्मा अनादि–अनन्त है और पुनर्जन्म होता है'' तो हम भी तो आपसे कह सकते हैं कि आप साबित करिये कि ''आत्मा अनादि–अनन्त नहीं है व पुनर्जन्म नहीं होता है।''

आप साबित नहीं कर सकते हैं न ?

तब क्या यह उचित नहीं है कि हम तब तक आत्मा के अनादि–अनन्त स्वरूप को ही स्वीकार करें जब तक कि यह साबित नहीं हो जाता है कि आत्मा अनादि नहीं वरन् नश्वर है। तब क्यों नहीं हम आत्मा के आगामी अनंतकाल के लिये तैयार रहें; क्योंकि यही हमारे हित में है।

संदेह का लाभ किसे मिलना चाहिये ?

यदि हम सुरक्षा के लिये तैयार रहें और फिर खतरा उत्पन्न ही न हो तो हमारा क्या बिगड़ जायेगा ? पर यदि बिना तैयारी के खतरा उत्पन्न हो गया तो विचार कीजिये कि हमारा क्या होगा ?

सच्चाई तो यह है कि हमें शाश्वत सुख का वास्तविक लाभ तो तभी होगा जब हमें आत्मा के अनादि–अनंत अस्तित्व का संशय रहित असंदिग्ध विश्वास होगा। ऐसा कैसे हो यह जानने के लिये पढें, इस शृंखला की अगली कड़ी, आगामी अंक में।

पाठकों के पत्र...

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा लिखित 'आगम के आलोक में – समाधिमरण या सल्लेखना' नामक कृति को पढकर शिवाड–सवाईमाधोपुर (राज.) से वयोवृद्ध पण्डित बसन्तकुमारजी जैन शास्त्री लिखते हैं –

''आदरणीय श्री विद्वत्तरत्न डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल सा.

सादर जयजिनेन्द्र। शुद्धात्मसत्कार !

आपकी लिखी पुस्तक **'आगम के आलोक में – समाधिमरण या सल्लेखना'** मेरे हाथ में है। मैंने इसका आद्योपान्त अध्ययन किया है और पाया है कि आपने यह पुस्तक सटीक लिखी है। आगम के प्रमाण–आगमानुकूल है।

मैं समझ सकता हूँ कि सल्लेखना या समाधिमरण को आज हमारे विद्वानों और महामुनिराजों ने क्लिष्ट बना दिया है। सरल–सामान्य और अन्तसमय में भावनाओं को सहज बनाने की जगह आकुलित रूप दे दिया है।

मेरी आयु 84 वर्ष चल रही है और मैं आगमानुकूल श्रावकधर्म का पालन करता हुआ संयम साधना और सल्लेखना समाधि का अभ्यास कर रहा हूँ।

जब शरीर छोड़ना ही है तो शान्त सरल परिणामों से ही क्यों न छोड़ें। कब छोड़ना है, इसका तो भान नहीं; पर छोड़ना जरूर है।

मेरा अनुभव है कि 70 वर्ष की आयु के बाद अन्न नहीं लेना चाहिये। शरीर के परमाणुओं के अनुकूल फल, दूध व जल लेना चाहिये। अन्न 50–60 वर्ष की आयु तक ही शरीर का पोषक रहता है। पश्चात् तो बीमारी पैदा करता है।

वृद्धावस्था में अन्न का उपयोग न करने से शरीर हल्का रहता है और मन भी संतुलित रहता है, जिसे संयम कहा जाता है। इससे शरीर के साथ–साथ कषाय भी कृश हो जाती है।

मेरी 84 वर्ष की आयु में भी अन्न का त्याग रहते हुये भी शरीर में कोई बीमारी जैसे बी.पी., डायबिटीज या अन्य बीमारी नहीं है। कमर और घुटनों में दर्द भी नहीं। हाँ शरीर शिथिल जरूर है – सो इन पुद्गल परमाणुओं का अपना स्वभाव है।

मैं रोजाना आपको सुबह 7 बजे **जिनवाणी चैनल पर सुनता हूँ और बहुत अच्छा लगता है। आगम की वास्तविकता का बोध भी होता है।** आपको बहुत बहुत धन्यवाद।''

आपका ही अपना

बसन्तकुमार जैन शास्त्री

50/358, प्रतापनगर, सेक्टर–5,

सांगानेर, जयपुर

3–11–2015

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें–

वेबसाईट – www.vitragvani.com

संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई

Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

(पृष्ठ 1 का शेष...)

आम्नायानुसार संपन्न कराये गये।

तीस वेदियों के शिलान्यासकर्त्ता – श्री प्रिसपाल धनपालजी टोंग्या इन्दौर, श्री दिनेशजी जैन उदयपुर, श्री पृथ्वीचंदजी रविजी जैन दिल्ली, श्री अरुणजी जयकुमारजी दिल्ली, श्री दिनेशजी जैन दिल्ली, श्री अशोकजी जैन दिल्ली, श्री सुनीलजी जैन दिल्ली, श्री श्रवणकुमारजी जैन दिल्ली, श्री कमलकुमारजी बड़जात्या मुम्बई, श्री नरेन्द्रजी बड़जात्या जयपुर, श्री आदीशजी जैन दिल्ली, श्री सतेन्द्र रामशरणजी जैन दिल्ली, स्व. श्री सुमनभाई दोशी की स्मृति में श्री चेतनभाई दोशी मुम्बई, श्री महेन्द्रभाई भालानी मुम्बई, श्री कल्पना-हर्षित कोठारी मुम्बई, श्री आर्जव-हर्षिल शाह मुम्बई, श्रीमती मालविकाबेन-पंकजभाई पारिख मुम्बई, श्री भूपतभाई के. गांधी मुम्बई, श्री सहज सुशीलजी जैन इन्दौर, पण्डित सिद्धार्थकुमारजी दोशी रतलाम, अश्रुबेन दयाबेन शाह मुम्बई, श्रीमती मधुबाला पी.शाह मुम्बई, श्रीमती अलका-विनय बंसल इन्दौर, श्री विजयकुमारजी शाह सोलापुर, श्री अशोकजी जैन कोटा, श्रीमती मीताबेन-निशाबेन मुम्बई, श्रीमती शशिकला बेन मुम्बई आदि महानुभाव उपस्थित थे।

अन्य विशिष्ट अतिथि – श्री सतेन्द्रजी जैन (गृहमंत्री-दिल्ली), श्री अजितप्रसादजी जैन दिल्ली, आदीशजी जैन दिल्ली, श्री विपिनभाई वाघर जामनगर, श्री प्रदीपभाई वाघर जामनगर, श्री कान्तिभाई मोटाणी मुम्बई, श्री प्रवीणभाई वोरा मुम्बई, श्री अशोकजी घीया मुम्बई, पी.सी. जैन दिल्ली, श्री रणधीरसिंहजी जैन दिल्ली, श्री संजयजी जैन दिल्ली, श्री अरुणजी जैन दिल्ली, श्री विजयकुमारजी जैन दिल्ली, एस.के. जैन दिल्ली, श्री महेन्द्रजी चौधरी भोपाल, श्री फूलचंदजी गोयल भोपाल, श्री अशोकजी जैन 'सर' उज्जैन, श्री कैलाशजी छाबड़ा मुम्बई, श्री चेतनजी वखारिया मुम्बई, श्री उल्लासजी जोबालिया मुम्बई, श्री देवांगजी कामदार मुम्बई, श्री केतनजी दोशी मुम्बई, श्री जिनल आर. शाह मुम्बई, श्री भव्य सी. मेहता मुम्बई, श्री सोमिल सी. मेहता मुम्बई, श्री दिरेन्द्र आर. दोशी मुम्बई, श्री धीरेन्द्र आर. शाह मुम्बई, श्री महेन्द्रजी भालाणी मुम्बई, श्री धीमंतजी सेठ मुम्बई, श्री धीमंतजी संघवी मुम्बई, श्री अशोक वी. शाह मुम्बई, श्री विजयजी बोटादरा मुम्बई, श्री अशोकजी मेहता मुम्बई, श्री समीरजी दोशी मुम्बई, डॉ. रजीकान्त बी. शाह मुम्बई, श्री भरतजी भायाणी मुम्बई, श्री नवीनजी चन्द्रा मुम्बई, श्री रमेशजी शाह मुम्बई, श्री मुकेश रविचन्दजी मेहता मुम्बई, श्री जयेशजी मेहता मुम्बई, श्री सुनील एस.जैन मुम्बई, श्री सुभाष एस. जैन मुम्बई, श्री सिद्धान्त एस. जैन, श्री शिरीश एस. जैन, श्री निखिलजी बाकलीवाल, श्री कौशलजी वाघानी, श्री आर.के. जैन, श्री सचिन एम. शाह, श्री हर्षदजी कोठारी, श्री भूपतजी गांधी, श्री धीरजलालजी शाह, श्री चन्द्रप्रकाशजी जैन, डॉ. सुरेशजी जैन नागपुर, श्री चन्द्रभानजी घुवारा, श्री पंकजजी पाण्डे अहमदाबाद, श्री अरुणकुमारजी पाण्डे अहमदाबाद, श्री शैलेषजी चौकसे अहमदाबाद।

अन्य विशिष्ट विद्वान – इस अवसर पर डॉ. मुकेशजी शास्त्री 'तन्मय' विदिशा, पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन, पण्डित शिखरचंदजी जैन विदिशा, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित रतनचंदजी शास्त्री कोटा, पण्डित जयकुमारजी कोटा आदि विद्वानों की गरिमामयी उपस्थिति रही। स्थानीय विद्वानों में पण्डित रतनलालजी शास्त्री, पण्डित दिलीपजी बाकलीवाल, पण्डित मनीषजी शास्त्री, पण्डित नितुलजी शास्त्री, पण्डित अशोकजी शास्त्री, पण्डित सुदीपजी शास्त्री, पण्डित सतीशजी कासलीवाल, पण्डित अनिलजी जैन भिण्ड, सुश्री प्रमिला बहिन राजमौहल्ला आदि महानुभावों का भी समागम प्राप्त हुआ।

ज्ञातव्य है कि दिल्ली से 41 एवं मुम्बई से 172 साधर्मियों के अतिरिक्त जामनगर, अहमदाबाद, बड़ौदा, राजकोट, उज्जैन आदि अनेक नगरों से लगभग 2500 साधर्मियों ने उपस्थित होकर कार्यक्रम का लाभ लिया।

समस्त कार्यक्रमों का संयोजन एवं निर्देशन श्री मुकेशजी जैन ढाईद्वीप इन्दौर ने किया। सभी कार्यक्रमों में पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, श्री आदीशजी दिल्ली, श्री नरेन्द्रजी बड़जात्या जयपुर आदि का सक्रिय सहयोग रहा।

ज्ञातव्य है कि दिनांक 28 से 30 अक्टूबर तक रामाशाह मंदिर में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील एवं डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। **– अजितप्रसाद जैन, दिल्ली**

पुरानी पत्र-पत्रिकायें एवं जीर्णशीर्ण साहित्य भेजें

श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट मुम्बई द्वारा जबलपुर में स्थापित जिनवाणी संरक्षण केन्द्र में आप अपने यहाँ एकत्रित पुरानी व जीर्णशीर्ण पत्र-पत्रिकायें व साहित्य भेज सकते हैं। **पता –** विराग शास्त्री, 316, मिश्रबन्धु कार्यालय के सामने, मेन रोड़, दीक्षितपुरा, जबलपुर 482002 (म.प्र.) मोबाइल - 9300642434 **– संयोजक, विराग शास्त्री**

प्रकाशन तिथि : 13 नवम्बर 2015

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127